हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए
क्यूँ किसी के दर पे जाएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

मैं ग़ुलाम-ए-मुस्तफ़ा हूँ, ये मेरी पहचान है
ग़म मुझे क्यूँ-कर सताएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

अपना जीना, अपना मरना अब इसी चौखट पे है
हम कहाँ, सरकार ! जाएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

कह रहा है आप का रब 'अन्त फ़ीहिम' आप से
क्यूँ इन्हें मैं दूँ सज़ाएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

सामने है, ए 'अली के लाल ! उस्वा आप का
क्यूँ किसी का ख़ौफ़ खाएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

मैं ये कैसे मान जाऊँ ! शाम के दरबार में
छीन ले कोई रिदाएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

ये तो हो सकता नहीं ! ये बात मुमकिन ही नहीं !
मेरे घर आलाम आएँ, आप के होते हुए

हाल-ए-दिल किस को सुनाएँ, आप के होते हुए

कौन है, अल्ताफ़ ! अपना हाल-ए-दिल जिस से कहें
ज़ख़्म-ए-दिल किस को दिखाएँ, आप के होते हुए